P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-11* July- 2019
Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika

# बाल साहित्य में हिन्दू पौराणिक कथाओं का कलात्मक स्वरूप एवं महत्व

**अदिति स्वामी**
व्याख्याता,
चित्रकला विभाग,
केन्द्रीय विद्यालय,
झुंझनू, राजस्थान, भारत

**सारांश**

21वीं सदी के इस आधुनिक व्यस्ततम् समाज में आज परिवार के सदस्यों के पास भी पर्याप्त समय नहीं होता है। एकल परिवार एवं कामकाजी माता–पिता होने के कारण बच्चे अपने धर्म, समाज व नैतिक आचरण का उचित तरीके से विकास नहीं कर पाते, अगर हम ध्यान देवें तो 19वीं, 20वीं सदी के बाल मस्ती के और आज के 21वीं सदी के बच्चों के व्यवहार, बोलचाल, समझ एवं ज्ञान के स्तर में काफी फर्क पायेंगे। ये संभव है कि तब के बच्चे अधिक ज्ञानी एवं प्रत्येक कार्य में कौशल ना हो परन्तु उनमें एक नैतिक चरित्र एवं गहन समझ अवश्य होती थी जो जीवन चक्र को सफल रूप से जीने के लिये अति आवश्यक है। ये धैर्य, ज्ञान, समझ एवं नैतिकता उन्हें इन्हीं कथाओं और कहानियों द्वारा मिलती थी। आज का बालक पढ़ने में, खेल में, चित्रण में, नृत्य में अनेक प्रकार के कार्यों को एक साथ सफलता से कर लेता है, परन्तु अपने ही समाज, परिवार व उच्च चरित्र से पिछड़ जाता है, क्योंकि खाली समय में वह कम्प्यूटर, मोबाइल, टी.वी. में कार्टून देखने एवं गेम खेलने में लगाता है ना कि अपने माँ–बाप एवं दादा–दादी के पास बैठ कर बातों–बातों में ज्ञान लेने में।

**मुख्य शब्द :** बाल साहित्य, नव पीढ़ियों, हिन्दू पौराणिक कथाओं।

**प्रस्तावना**

प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति में बोलकर अपने ज्ञान को एक ज्ञानी पुरूष आने वाली नव पीढ़ियों को देता रहा है।[1] भारतीय प्राचीन काल से माना जाता है कि हिन्दू धर्म के सभी पौराणिक ग्रन्थों व वेदो को महान ऋषिगण अपने श्रेष्ठ शिष्य को सुनाते एवं वे इसे याद करके आगे आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाते। कुछ समय बाद इन्हें लिखित रूप में सुरक्षित किया जाने लगा। बच्चे अपने बुजुर्गों से इसी प्रकार की छोटी छोटी धार्मिक, नैतिक, पारम्परिक एवं सामाजिक कहानियां सुनते। यह परम्परा दो व्यक्तियों के बीच एक गहरा संबंध स्थापित करता है। पंचतन्त्र नामक प्रसिद्ध कहानियाँ विष्णु शर्मा द्वारा अपनी तीन बेटियों को शिक्षित एवं जीवन कौशल को समझाने के लिये सुनाते थे। यह एक प्राचीन परम्परिक सफल तरीका है जिससे बच्चों को संस्कारी, धार्मिक एवं सामाजिक जिम्मेदारियों को समझने, नैतिक आचरण वाले बनाते है। अमर चित्र कथा निरन्तर विभिन्न लेखकों एवं चित्रकारों द्वारा अपने–अपने तरीके से बनाई है जो आज के आधुनिक व्यस्त समय में भी बच्चों की पंसदीदा बाल साहित्य है।

इसी संदर्भ को लेते हुए **'भारत के प्रतिनिधि लोककथाएँ'** पुस्तक लेखक जयप्रकाश द्वारा लिखा गया है। विश्व के सभी भागों में लोक–कथाएँ कही–सुनी जाती हैं। जर्मन विद्वान बेनाफी (1859) के अनुसार–'विश्व में व्यापक लौक–कथाओं का मूल उदगम् स्थान भारत ही है।' लेकिन भारत में इन्हें संकलित करने की दिशा में बहुत कम काम हो सका है। फिर भी अभी तक भारत तथा उसके निकटतम देशों में लगभग साढ़े तीन हजार लोककथाएँ लिपिबद्ध की जा चुकी हैं। वेद, उपनिषद और पुराणों में दो व्याख्यान हैं, लोककथाओं के बीज उन्हीं में हैं। देवर्षि नारद ने रामकथा का एक ही स्वरूप वाल्मीकि के सम्मुख रखा था, लेकिन उसी को आधार बनाकर वाल्मीकि के जन–जन के बीच अथवा लोक–प्रचलित रामकथा के अनेक रूपों का अन्वेषण किया। महाभारत तो ऐसी कथाओं का भंडार ही हैं। बौद्ध और जैन दर्शन ग्रन्थों में भी ऐसी अनेक कथाओं का समावेश है। पंचतंत्र, हितोपदेश, बेताल पच्चीसी तथा जातक कथाओं की गणना भी लोक–कथाओं के अन्तर्गत करना ही समीचीन होगा।[2] (भारत के प्रतिनिधि लोककलाएँ – जय प्रकाश, प्रकाशित वर्ष 2000, चिंतन के सूत्र – हिन्दुस्तान साप्ताहिक, नई दिल्ली, पुस्तक पृष्ठ सं. 398)

भारतीय मध्यकालीन समय में बाल साहित्य में नये–नये प्रयोग एवं योजनाओं को रूप दिया जा रहा था। इस समय बाल साहिय में उर्दू भाषा में लिखी गई प्रसिद्ध कथा काव्य एवं चरित्रों जिनमें अमीर खुसरों एवं मिर्जा गालिब को सरल तरीके से बाल साहित्य का हिस्सा बनाया गया यह वह समय था जब भारत में मुगलों का शासन चलता था अतः संभव है मुगल धर्म, समाज परम्परा आदि के महत्व को बताती किताबो को अधिक महत्व देते हुये बनाया गया है। वही ब्रिटिश साम्राज्य में भारतीय बच्चों एवं ब्रिटिश परिवारों के लिये दो अलग–अलग प्रकार की बाल कहानी पुस्तकों को बनाने की आवश्यकता रही। क्योंकि ये दोनों ही समुदाय एक दूसरे से पूर्ण रूप से विपरित थे जहाँ भारतीय बच्चों के लिये पंचतत्र की कहानियां एवं जटाका नामक लोक कहानियों को लिखा गया वहीं दूसरी ओर अंग्रेजी भाषा में पाश्चात्य परिलोक एवं रोबिन हुड की साहसिक कहानियों को लिखा गया। सुकुमार राय, सत्यजीत राय, रविन्द्रनाथ टैगोर, आर.के. नारायण, अशोक मित्रण, बशीद ये बाल साहित्य को विभिन्न भाषाओं में लिखते थे इनके अलावा सलमान रशिद, विक्रम सेठ, रूसकिन बांड वे लेखक है जो आज के नव युवाओं को रोचक तरीके से कहानी के रूप से कुछ शिक्षित करने का प्रयत्न कर रहे है। बंगाली भाषा में सुकुमार रॉय ने कुछ सुप्रसिद्ध कहानियां लिखी, जिसमें लघु कहानियों का संग्रह – पागल दाशु एवं चलचित अचंचारी है। साथ ही बंगाल में सत्यजीत राय सुपरिचित फिल्म निर्माता एवं लेखक ने भी बच्चों के लिये कुछ कहानी किताबें लिखी जिनमें फेलुदा, सैलुटथ एवं प्रोफेसर सोनकु प्रमुख है ये सभी विज्ञान के चमत्कारों, आविष्कारों, कल्पनाओं की मिली जुली कहानियां है।[3]

**अध्ययन का उद्देश्य**

मेरे इस शोध में इसी समस्या को बताने का एवं इन बाल साहित्यों का महत्व, सही दिशा में बालक मन–मस्तिस्क को लगाने से संबंधित है जो आज के युग में कहीं खो सा गया है।

**मुद्रण एवं अन्य तकनीकों का बाल साहित्य पर प्रभाव**

भारत में मुद्रण तकनीक का सफल प्रयोग राजा–रवि वर्मा ने अपने चित्रों के लिथो प्रिन्ट निकाल कर किया यही से कला में छापाकाल एवं मुद्रण शैली को विभिन्न स्तरों में प्रयोग किया जाने लगा। हिन्दु देवी–देवताओं के चित्रों से लेकर विज्ञापन कला तक आधुनिक चित्रकला से लेकर बाल साहित्य तक मुद्रण एवं आधुनिक तकनीक से बड़े स्तर पर कला का रूप अधिक पहुँच वाला एवं अधिक कलात्मक कर दिया है। विभिन्न छाप तकनीक, सी.डी. विडियो, ओडियो, कम्प्यूटर, टी.वी. एवं अन्य तकनीकों द्वारा बाल साहित्य को सुनने वाली प्रक्रिया से देखने एवं पढ़ने से लेकर टी.वी. से प्रसारित चल चित्रों एवं पुरी कथा को सिनेमा हॉल से देखने तक का बड़ा परिवर्तन आया है। आधुनिक समय में ऐसी कई एकल परिवार हैं जहाँ दादा–दादी बच्चों के साथ नहीं रहते हैं। साथ ही माँ–बाप दोनों ही नौकरी करने की वजह से अपने बच्चों को अधिक समय नहीं दे पाते हैं। ऐसे में ये कलात्मक कथायें ही उन्हें अपने धर्म व नैतिकता को विकसित करने का मौका देते हैं। कलकत्ता में ''लाल कमल'' और ''नीलकमल'' नामक बाल कहानी 100 सालों तक बच्चों को पसन्द आई थी। इसी प्रकार ''दादी का कहानियों का पिटारा'' जो कई वर्षो पुरानी है जिसे नवीन रूप में कैसेट, डी.वी.डी. एवं सी.डी. तथा चलचित्र फिल्म की श्रंखला जी. अल्फा बंगाल नेशनल प्रसारण पर 2005–07 तक प्रसारित किया गया।

**मुद्रण तकनीक**

जब बाल साहित्यों के लिए मुद्रण तकनीक की शुरूआत एवं विकास हुआ तो लेखकों ने बाल मन को पसन्द आने वाले साहित्य, कथाओं, चरित्रों काल्पनिक कथाओं, नैतिक जीवन से सम्बन्धित लेखन कार्य करना प्रारम्भ कर दिया।[4] इन कहानियों को जिनमें महाभारत, रामायण, शिवपुराण, हनुमान के जीवन विष्णुपुराण आदि जैसे विशाल पौराणिक ग्रन्थ भी शामिल थे। उन्हें लेखकों ने बालक मन एवं समझ के अनुरूप आसान एवं रूचिकर रूप में लिखा तो आधुनिक छापा तकनीकों ने इसे और आकर्षक एवं जन समूह तक आसानी से पहुँचाने का काम किया। समाचार पत्रिकाओं ने बाल साहित्य का अलग पृष्ठ छापना शुरू किया। बाल कहानियों की अलग–अलग अनेकों कोमिक्स बुक्स छपने लगी बाल साहित्य से सम्बन्धित पत्रिकायें भी कहानियों को बच्चों तक पहुचानें में मददगार रही हैं।[5] पश्चिम बंगाल में 1905 में जब ब्रिटिश साम्राज्य था तब बाल साहित्य के लेखन का कार्य कई लेखकों ने किये जिसमें मेतरा मजूमदार (1877–1957), दिनेशचन्द्र सेन (1866–1939), उपेन्द्र किशोर रॉय (1869–1915) अरवीन्द्र नाथ टैगोर (1871–1951) रविन्द्रनाथ टैगोर (1861–1941 प्रमुख थे। इनमें दिनेशचन्द्र सेन ने बंगाली लोक कथाओं को पुनर्जीवित किया एवं बाल साहित्य के रूप में इसकी पहचान बनाई। दादा मोशाय तौली जो ''दादी की कहानियों का पिटारा'' के रचियता थे, ने बाल साहित्य को प्रोत्साहित किया एवं पारम्परिक धार्मिक, जादुई, परी, दानव आदि सभी तरह की कहानियों को रचा।[6]

मुद्रण तकनीक ने लोक कथाओं एवं पौराणिक कथाओं को मौखिक रूप से एक स्थाई शब्दों में परिवर्तित कर दिया। ये बाल–साहित्य शुरुआत तोर में अंग्रेजी भाषा में छपे जो ऊँचे वर्ग के बच्चों जो की आसानी से अंग्रेजी पढ़ सकते थे उन्हीं शहरी बच्चों तक सीमित रही। 1967 में जब इंडियन बुक हाउस ने

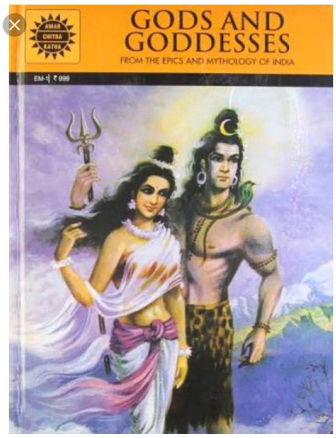

अमर चित्रकथायें जो कि परम्पराओं, पौराणिक कथाओं, कहानियों पर आधारित थी कि कोमिक बुक शुरु की तो इसने एक सकारात्मक असर डाला। जब भारतीय बच्चे अपनी नैतिकता सुआचरण एवं पारम्परिक विचार से भटक रहे थे तब इन बाल साहित्यों ने कृष्ण, राम एवं हनुमान जैसे चरित्रों को उनके सामने प्रस्तुत किया। ये कहानियाँ पौराणिक चरित्रों, लोक कथाओं, एवं प्रमुख इतिहासकारों के जीवन पर लिखी जाती थी। गाँधी, स्वामी विवेकानन्द, मोरार जी देसाई, आदि कई सुप्रसिद्ध व्यक्तियों के जीवन के बारे में बता कर बाल साहित्य बच्चों का अपने जीवन की सही दिशा को तय करने एवं उस पर ईमानदारी से चलने के लिये प्रोत्साहित एवं प्रेरित करती हैं। जन सम्पर्क एवं जन संसाधनों से बाल साहित्य किसी एक स्थान देश, जगह पर से नहीं बंधा भारतीय मूल की कहानी पाश्चात्य देशों में पढ़ी देखी जा रही हैं। कुछ भारतीय चरित्रों ने तो विश्व बाल साहित्य में अपनी एक अलग पहचान बना ली है।[7]

**(Illustration)**

इन कहानियों की किताबों को कोमिक बुक (Comic Book) कहा गया जिसमें एक कथा कहानी को बच्चे की उम्र उसकी रूचि एवं मानसिक स्तर के आधार पर चुना एवं उसे रोचक तरीके से लिखा जाता है। जिसे मुद्रित करके एक किताब का रूप दिया जाता है। यह कॉमिक बुक शुरूआती तौर में छोटी आकार की होती थी जिसमें कहानी के सरल रेखा चित्र या रंगचित्र होते थे। परन्तु आज हम बाजार में विभिन्न आकारों में सुसज्जित, सुन्दर चित्रों से भरे बाल साहित्य देख सकते हैं। इन बाल किताबों के पृष्ठ चिकने चमकदार एवं डिजिटल प्रिंट किये होते हैं। जिससे इनमें बने चित्र अधिक रंगीन एवं सुन्दर दिखाई देते हैं। जो चित्र एक दृश्य या कहानी या किसी कहानी के एक हिस्से को चित्र के द्वारा दिखाता है वह (Illustration) कहा जाता है।[8] इस प्रकार के चित्रों को बाल साहित्य में शामिल करने से बालक अधिक रूचि से पुस्तक पढता है एवं अच्छे तरिके से उस कहानी को समझ पाता है। जैसे पौराणिक ग्रन्थ रामायण की कोमिक बुक (Comic Book) लिखते हुये राम, रावण, सीता, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघन, सुर्पणखां, हनुमान, जटायु आदि अनेकों चरित्रों के चित्रो को देखकर वह उन्हें अपने जीवन में आसानी से उतर पाते हैं एवं कहानी को लम्बे समय तक याद रख पाते हैं। यह चित्र हस्त निर्माण एवं कम्प्युटर तकनीक द्वारा बनाये जाते हें जिससे सुन्दर प्राकृतिक चित्रण, चटक रंगों व काल्पनिक तत्वों को प्रस्तुत किया जाता है। पौराणिक विषयों पर कोमिक बुक (Mythological Base Comic Book) में चरित्रों को सजीव बनाने का थोड़ा प्रयत्न अवश्य होता है परन्तु यदि हम चम्पक, जंगल बुक, चाचा चौधरी, पचंकथाओं की बात करें तो इनमें काल्पनिक चित्रण है जैसे बोलते खरगोश जंगल में विभिन्न शहरी कार्य करते जानवर आदि रोचक मनोरंजन प्रद कहानियों के अनुरूप चित्रित किये जाते हैं। ये चित्र बाल साहित्य का महत्वपूर्ण हिस्सा है जो बालक को आकर्षित करने एवं पढ़ने के लिये प्रेरित करता है। चलचित्रों एवं आधुनिक तकनीकों द्वारा बाल साहित्य का बदलता रूप भारतीय लोक कथायें एवं पौराणिक कथायें एक बार फिर से प्रसिद्धि की ओर बढ़ा है जिसका कारण बढ़ता प्रसारण क्षेत्रा है। धर्मनिरजंन मिश्रा मजुमदार ने इस ओर सबसे पहले 50 साल पूर्व ही L.P रिकार्ड बनाये फिर 20 वर्ष बाद ओडियों केसेट तथा 3 साल पहले ही एक ऐनिमेशन (Animation) फिल्म बनाई। चलचित्र फिल्म (Animation Film) में हनुमान, कृष्णा , गणेश के साथ–साथ भारतीय फिल्म निर्माताओं ने कुछ जादु, शक्तिमान जैसे काल्पनिक चरित्रों की फिल्म बनाई एवं टी.वी. कार्टून कार्यक्रम बनाये साथ ही इनकी Comic Book भी छपी है।[9]

**आधुनिक तकनीकों का प्रयोग**

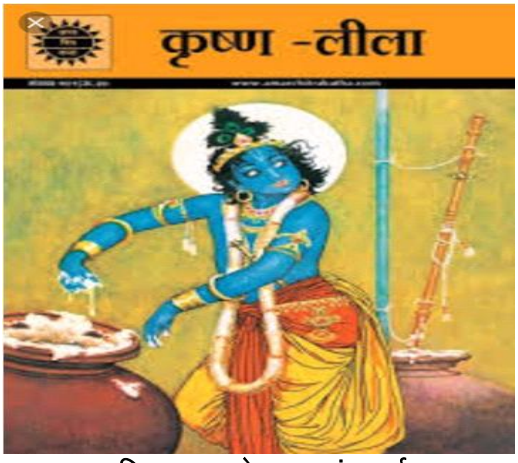


**अमर चित्र कथा, लेखक अनंत पाई, 1996**

नवीन आधुनिक तकनीकों (New Mass Media) का प्रयोग 1970 से शुरू हो गया था। जिसने सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, एवं भारतीय संस्कृति पर गहरा प्रभाव डाला है। इन नई तकनीकों में सी.डी. रोम (CD Rom) एच.टी.एम.एल (HTML) स्ट्रिमिग मिडिया (Streaming media) वीडियों संशोधन (videoe diting) वेब एप्लीकेशन (web application) एवं डी.वी.डी. विडियों (DVD video) प्रमुख है। बाल फिल्मों (children's animation movies) में हनुमान (2005), जो हिन्दु पौराणिक ग्रन्थ रामायण में

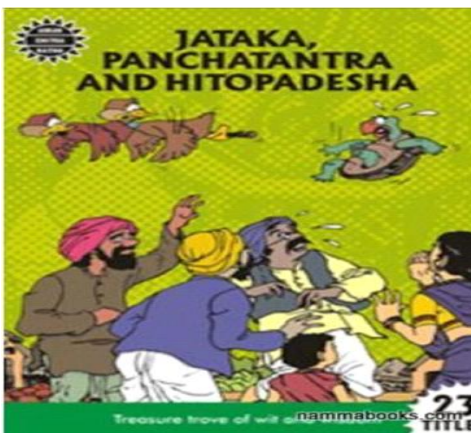


**कम्प्यूटर कृत चित्र (Illustration)**

वर्णित हनुमान के बाल रूप एवं जीवन पर आधारित थी कृष्णा (2006) यह हिन्दु देवता विष्णु के अवतार हैं जिन्हें नटखट बाल रूप को एवं चतुर एवं बहादुरी को इस फिल्म में दिखाया गया है बाल गणेश (2007) इसमें हिन्दु देवता गणेश के नटखट बाल रूप को चित्रित किया हे। मॉय फ्रेंड गणेशा (2007) में एक बच्चे एवं भगवान गणेश के मध्य की दोस्ती को फिल्माया गया है। दशावतार (2008) में बनी जिसमें भगवान विष्णु के दस अवतारों के बारें में इस फिल्म में दिखाया गया है। आधुनिक तकनीक द्वारा कागज पर बने चित्रों को चल चित्रों में परिवर्तित कर दिया जाता है। यह एक लम्बी प्रक्रिया है जिसमें चरित्र को किस तरह का दिखाना है। से लेकर उस फिल्म के वातावरण (Background) तथा उसकी सजीवता का गहरा अध्ययन किया जाता हैं। फिर एक दृश्य के लिये कई चित्र (Illustration) बनाये जाते हैं जिसे कलाकार (artist) हाथ से या कम्प्यूटर की मदद से बनाते हैं। इन फिल्मों में मनोरंजक संगीत, गीत एवं ध्वनि, आवाजों का प्रयोग किया जाता है। जैसे फिल्म ''रामायण'' में रावण की आवाज अमरीष पुरी की है सीता की आवाज मनीषा कोइराला ने दी है।[10]

अनंत पई (17 सितम्बर 1929, कार्कल, कर्नाटक – 25 फरवरी 2011, मुंबई), जो अंकल पई के नाम से लोकप्रिय थे। भारतीय शिक्षाशास्त्री और कॉमिक्स, खासकर अमर चित्र कथा श्रंखला के रचयिता थे। इंडिया बुक हाउस प्रकाशकों के साथ 1967 में शुरू की गई इस कॉमिक्स श्रृंखला के जरिए बच्चों को परंपरागत भारतीय लोक कथाएँ, पौराणिक कहानियाँ और ऐतिहासिक पात्रों की जीवनियाँ बताई गई। 1980 में टिंकल नामक बच्चों के लिए पत्रिका उन्होंने रंग, रेखा, फीचर्स, भारत का पहला कॉमिक और कार्टून सिंडिकेट, के नीचे शुरू की। 1998 तक यह सिंडिकेट चला, सिके वो आखिर तक निदेशक रहे। दिल का दौरा पड़ने से 24 फरवरी 2011 को शाम के 5 बजे अनंत पई का निधन हो गया।[11] भारत में सर्वाधिक मात्रा में बिकने वाली कॉमिक बुक 'अमर चित्र कथायें 1967 में बाल साहित्य का हिस्सा बनी। इसकी 400 कॉमिक 20 भाषाओ में 10000 से ज्यादा प्रकार की प्रतिलिपियाँ भारत में कोने–कोने में बिकी एवं बच्चों द्वारा अधिकाधिक पढ़ी गई।[12]

**निष्कर्ष**

बाल साहित्य की रचना करना आसान कार्य नहीं है, इसमें जहाँ लेखन को बाल मन मस्तिष्क को ध्यान में रखकर लिखा जाता है वही हस्त निर्मित या कम्प्यूटर द्वारा आकर्षक चित्रों को भी कहानियों का हिस्सा बनाया जाता है। इन चित्रों को देख कर ही बाल कथा को ओर अधिक आकर्षित होता है व अच्छे से कथा पात्रों को समझ पाता हैं। जैसे कृष्ण के बाल रूप को लेकर एक चलचित्र (मूवी) का निर्माण किया गया जिसमें कृष्ण के मासूम नटखट रूप को दर्शाया गया, यह चलचित्र देख बालक आसानी से श्री कृष्ण की बाल्यअवस्था की कथा को जान जाता है। यही नहीं रामायण, महाभारत, गीता उपदेश नैतिक चित्रण निर्माण जैसे कथाओं एवं कहानियों को भी चित्रों द्वारा कॉमिक बुक के रूप में या चलचित्रों के रूप में बड़ी रूचिपूर्ण ढंग से समझ लेते है।[13] (रमेश दिविक – बाल साहित्य सृजन – नई चुनौतियाँ (2017), विश्व हिन्दी जन : अर्न्तराष्ट्रीय संस्था एवं हिन्दी भाषा पर लिखे गये एक लेख का हिस्सा)

परन्तु आज बाल साहित्य का अस्तित्व भी डगमगा रहा है जैसे कहानी सुनने–सुनाने की एक सशक्त परम्परा खत्म सी हो गई है, वैसे ही उद्देश्य से विहीन बाल साहित्य ही रह गये है जिनका उद्देश्य बाजा के स्तर तक ही सीमित रह गया है। इसी संदर्भ में रमेश दिविक ने अपने पुस्तक 'बाल साहित्य सृजन – नई चुनौतियाँ' में लिखा है कि सृजन किसी भी समय का क्यों न रहा हो अपने उपजने में वह चुनौतीपूर्ण ही रहा होगा। हर उचित और अच्छी रचना सजग और जिम्मेदार रचनाकार के समक्ष चुनौती ही लेकर आती है। लेकिन जब हम सृजन के साथ 'नई चुनौतियां' जोड़ते है तो उसका आशय निरन्तर बदलते सामाजिक–प्राकतिक परिवेश में नई समझ और नए भावबोध की गहरी समझ से लेस रचनाकार की परम्परा की अगली गढ़ी के रूप में अपेक्षित सृजन को संभव करने वाली तैयारियों से होता है। यूं मेरी समझ में तो हर जिम्मेदार बाल साहित्यकार के सामने उसकी हर अगली रचना नई चुनौती ही लेकर आती है क्योंकि यहां न कोई ढर्रा काम आता है और न ही कोई सीख। सही मायनों में तो अन्ततः अपना बोना और अपना काटना ही प्रायः काम आता है। चाल या चलन को चुनौती देते हुए, अपने प्रगति–प्रयोगों के प्रति उपेक्षा के आघात सहते हुए भी, अन्यथा बालक को दो क्षण भी नहीं लगते किसी भी रचना से मुंह फेरते, अब सबके मन में सिर्फ एक ही सवाल है – मैं कब मशहूर बनूंगा/बनूंगी। जो भी युवा लेखक और लेखिकाएं हैं वे अपनी इस चाहत के कारण खुद से द्वंद्वकर रहे हैं। इसी द्वंद्व के कारण वे जमीनी हकीकत और इंसानी भावनाओं को भूल गए हैं। उन्हें एक बार फिर से जीवन के शाश्वत सत्य और भावनाओं के बारे में सीखना होगा।[14]

इस प्रकार के साहित्य, कहानियों, जिनमें भूत–प्रेतों, जादू–टोने, बिना आदर्श और उद्देश्य के प्रकाशित हो रही है। ऐसा ही नकारात्मक प्रभाव वाली चल चित्र टी.वी. पर दिखाये जाते हैं, जिनसे बच्चे असम्मानीय शब्दों और व्यवहार को सीखते हैं। जहाँ बच्चे पंचतंत्र, अमर चित्र कथायें, कृष्ण , राम, हनुमान, शिव तथा प्रेरणादायक जीवनियाँ पढ़कर अपने खाली समय का सत्यउपयोग करते हैं वही अब अनैतिक आचरण एवं विचारों से घिरे जा रहे हैं। पढ़ाई का बोझ, प्रतिस्पर्धा की दौड़ और परिवार की उम्मीदों में बालक का बचपन कहीं दब सा गया है। ऐसे में बच्चों के सही मार्गदर्शन की अतिआवश्यकता है।[15] उनमें यह सोच विकसित करना जरूरी है कि क्या सही है और क्या गलत। इसी बात को ध्यान में रखते हुये आज के समय में प्रकाशित होने वाले बाल साहित्यों का भी उद्देश्य यही होना चाहिये कि वह ऐसी रचनाऐं करें जिससे बाल्य अवस्था से ही बच्चे में समझदार, ईमानदार एवं अच्छे आचरण का विकास हो

और ऐसे गुणों को प्रदान करने में हिन्दू पौराणिक कथायें एक बेहतरीन विकल्प हैं। जिसे कई आकर्षक तरीकों, चित्रों से बच्चों को समझाया व पढ़ने के लिये प्रोत्साहित किया जा सकता है।

**अंत टिप्पणी**

1. *उपाध्याय, रामजी प्राचीन भारतीय सांस्कृतिक साहित्य की पूर्व भूमिका*
2. *जयप्रकाश भारत की प्रतिनिधि – लोककथाएँ (2000)*
3. *पं. विश्वनाथ साहित्य दर्पण*
4. *मुखर्जी, आर. के. भारतीय संस्कृति और कला।*
5. *के दामोदरन, भारतीय चिन्तन परम्परा, पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली*
6. *आन्द्रे बेतेई, विशमता और सामाजिक परिवर्तन 1975*
7. *Febri, R., Color-A Complete Guide for Artists, New York*
8. *Jeremiach Polos, The Art of the book in India 1982*
9. *Kaul, M., Trends on Indian Paintings, New Delhi, 1961*
10. *Kramrisch, S., The Art of Indian through the Ages, London, 1954*
11. *Luckiesh, M., Colour & its Application, 2nd Edition, D. Van Nostrand, 1921*
12. *Mukherjee, R.K., The Social Function of Art, Bombay*
13. *Mulk Raj Anand, Hindu view of Art*
14. *रमेश दिविक, बाल साहित्य सृजन – नई चुनौतियाँ (2017)*
15. *Sharma, B.N.,Social and Cultural History, Northern India*